International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

New Consciousness in Hindi Drama

Dr. S.N.Manjula

हिन्दी नाटक में नयी चेतना

डॉ. एस. एन. मंजुला

असोसिएट प्रोफेसर

जी.एफ.जी.सी., बंगारपेट,कोलार

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में चारों ओर व्याप्त धार्मिक अराजकता, छुआछूत, दिखावा तथा अन्धविश्वासों के घने कुहरे को निर्भीकतापूर्वक भेदने वाले, मस्तमौला और फक्कड संत कबीर एवं मराठी संत कवि तुकराम निरन्तर संघर्ष–चेतना को गतिशील बनाए रखने वाले व्यक्तित्व है। लापरवाह, दृढ और उग्र, मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय सामाजिक चिन्तन को प्रभावित करता रहा है। नाटक का सम्प्रेषण समूहगत होता है, इसलिए व्यक्तिगत अनुभूति भी समूह से जुडकर नाट्यात्मक अनुभूति की गहराई का एहसास कराती है।

हिन्दी नाटक में नयी चेतना तथा प्रौढ दृष्टि का आविर्भाव छठे–सातवें दशक से माना जाता है जिसके विकास में राष्ट्रीय नाटक विद्यालय की स्थापना की घटना का एक महत्वपूर्ण बिंदु माना जाता है।

परंतु स्वतंत्रपूर्व ही भारतीय जन नाट्य संघ, पृथ्वी थियेटर, इंडियन नेशनल थियेटर और स्वतंत्रता के बाद आकाशवाणी संगीत और नाटक विभाग, श्रीराम सेंटर फार ऑट्र्स व कल्चर (Sriram Centre for Arts & Culture) , इलाहाबाद, आर्टिष्ट एसोशियेशन, वारणासी श्री नाटयम, जैसी कई सरकारी, गैर–सरकारी संस्थएँ भी पर्याप्त रूप में सक्रिय थी। इन्हीं प्रयासों को समकालीन हिन्दी नाटक का प्रारंभिक रूप माना जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में देश के दूसरे क्षेत्रों की भाँति हिन्दी क्षेत्रों में भी रासलीला, रामलीला स्वाँग, भगत, नोंटकी ख्याल माच आदि पारंपरिक लोक नाट्य लोकप्रिय थे।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी में मौलिक नाटक लिखने के बाद एक नये ढंग के नाटक की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

शुरूआत हुई। व्यवस्था के विरोध एवं सामाजिक–राजनैतिक व्यंग्य नाटकों की परंपरा का प्रारंभ करने में 'अंधेरी नगरी' नाटक द्वारा भारतेन्दु ने हिन्दी नाटक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। समकालीन हिन्दी नाटककार ने अपने नाटकों के माध्यम से राजनीतिक विद्रूपता को जनता के सामने रखा और उनके माध्यम से राजनीति की बहु आयामी विसंगतियों पर कर्रारा व्यंग्य करना प्रारंभ किया। इस दृष्टि से शुतुरमुर्ग (ज्ञानदेव अग्निहोत्री) महत्वपूर्ण है जिसमें पाखण्डी, ढोंगी और स्वार्थी चरित्र को दिखाया गया है।

समकालीन हिन्दी नाटक जीवन से जुडा हुआ नाटक है। जीवन के प्रत्येक पक्ष को छूते हुए मानस की पुरानी मान्यताएँ, धर्म, ईश्वर के प्रति धारणा, नैतिकता के मानदंड संबंधों में टकराहट आदि प्रतिबिंबित करने में नये नाटक क्षमता से पूर्ण है। व्यक्तिगत चेतना के साथ–साथ समष्टिगत चेतना को भी महत्व देते हुए समकालीन हिन्दी नाटककार ने व्यक्ति तथा समाज से जुडी हुई विभिन्न समस्याओं को अपने नाटकों का विषय बनाया है। इसे समृद्ध करने में उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीश चन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, शंकर शेष, लक्ष्मीनारायण लाल, भीष्म साहनी,बलराज साहनी, हबीब तनवीर, ज्ञानदेवी अग्निहोत्री, रमेश बक्षी, विपिनकुमार अग्रवाल, मुद्राराक्षस, गिरिराज किशोर, व्रजमोहन शाह, मणि मधुकर, विनोद रस्तोगी, शरद जोशी, सुशीलकुमार सिंह, नरेन्द्र कोहली, मृणाल पांडे, मन्नू भंडारी, असगर नंदकिशोर आचार्य, राजेश जोशी आदि कई नाटककारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी साहित्य के छायावादी दौर में जयशंकर प्रसाद जैसे प्रतिभाशाली नाटककार के अभाव के साथ–साथ नाटकों को टेलिविजन फिल्मों से प्रतिस्पर्दा करना पड रहा है।

इस स्थिति में ऐसे नाटककारों की बाढ सी आ गयी जो केवल खेलने के लिए नहीं अपितु पढने या कक्षाओं में पढाने के लिए भी नाटक लिखने लगे। छठे दशक के बाद से ही हिन्दी नाटकों में परिवर्तन और क्रांति आ गयी। जीवन के प्रत्येक पक्ष की सशक्त अभिव्यक्ति, शब्दातीत अर्थ, मौत की महत्ता, हरकत की भाषा आदि नाटकों में प्रयोग हो रहे है।

साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक में जन–संप्रेषणीयता के कारण रचनात्मक नयेपन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तथा सृजनात्मक, मूल्यों और कलात्मक सौंदर्य दिखाई देने लगी। भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, पदलोलुपता, शोषण , अत्याचार नये नाटकों में चित्रित है। अस्तित्ववादी परिस्थितिया के अनुकूल होने के कारण समसामयिकता का बोध कराता है। मार्टिन एसलिन के अनुसार Modern drama is essential because it deals with the individual effort to find his own meaning in the universe (विश्व में मनुष्य की अपनी अर्थवत्ता की तलाश करने से संपृक्ति रखने कारण आधुनिक नाटक अस्तित्वादी है।)

रामराज्य की कामना करनेवाले देश के आम आदमी का सपना भंग हो गया है। दिशाहीनता, मूल्यहीनता, स्वार्थपरकता, आपसी मनमुटाव, अपराधिकरण आदि कुप्रवृत्तियाँ जो संपूर्ण भारतीय जनजीवन को अपनी जडों तक हिला दिया था। समकालीन हिन्दी नाटककार ने नाटकों के माध्यम से बहुआयामी विसंगतियों को जनता के सामने रखकर राजनीतिक गतिविधियों पर व्यंग्य करते हुए उनका खोखलापन, भ्रष्टाचार, झूठी उम्मीदें आदि का चित्रण कर रहे है। ''शुतुरमुर्ग'' में सिंहासन को सुरक्षित बनाये रखने के लिए राजा स्वयं अपने मंत्रियों को भ्रष्टाचारी बनाता है। 'बकरी' नाटक गाँधीवादी सिद्धांतों की प्रतीक है। 'सिंहासन खाली है' नाटक में जनता की प्रतीक महिला के मुँह से ऐसे शब्द निकलते हैं हाँ मैं यंत्रणा भोग रही हूँ, सदियों से.....जिसने चाहा.....मेरे साथ बलात्कार किया.....मनमानी की खिलवाड किया.....लूट खसोट की.....राजतंत्र ने भी.....प्रजातंत्र ने भी..... .....देशी राजाओं ने भी.....और विदेशी राजाओं ने भी हर एक ने यही किया.....हर बार यही हुआ।

अंधों को हाथी, अब्दुल्ला दीवाना, रस गंधर्व, बोलो बोधिवृक्ष तालों में बंद प्रजातंत्र त्रिशंकु आदि नाटकों में राजनैतिक उथल–पुथल, स्वार्थपूर्ति के लिए युवा–शक्ति का दुरूपयोग का चित्रण है। 'इन्ना की आवाज' में सुलतान ने इन्ना को वजीर आजम बनाकर शक्तिहीन कर देता है। व्यवस्था के शोषण के शिकार एक कलाकार की त्रासदी का चित्रण भीष्म साहनी के 'हानूश' नाटक में मिलता है 'पहला राजा', 'कथा एक कंस की', 'प्रजा ही रहने दो', 'शंबूक की हत्या' जैसे नाटक इतिहास पुराण तथा अतीत की पाश्वभूमि में समकालीन राजनीतिक माहौल का यथार्थ चित्रण करते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

है।

जनता के मन के आक्रोश को स्वयं अनुभव करते हुए समकालीन हिन्दी नाटककार ने राजनीतिक गतिविधियों, समस्याओं को चित्रित किया है। बदलते राजनीतिक सामाजिक आर्थिक परिवेश में मानवीय संबंधों में परिवर्तन ही नहीं व्यक्ति–व्यक्ति के बीच दूरिया आने लगी है। स्वार्थ अविश्वास के कारण उनमें शुष्कता एवं निस्सारता आने लगी है। स्त्री–पुरूष , माता–पिता तथा बच्चे, भाई–बहन, मित्र हर प्रकार का रिश्ता केवल दिखावे भर का ही रह गया है। नये नाटकों में नारियों का तेज तर्रार आक्रमक और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता का रूप सामने आया है जहाँ पुरा मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लगता है। आधे अधूरे, 'द्रौपदी' और 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में स्त्री–पुरूष संबंधों की नयी व्याख्या हुई है। नये नाटककारों ने यौन–भावना या यौन–व्यापार को नैतिक–अनैतिक नहीं केवल जैव माना है।

वास्तव में समकालीन हिन्दी नाटककार अपने नाटकों के माध्यम से आम जनता की दयनीय स्थिति और त्रासद नियति के लिए जिम्मेदार ताकतों के चेहरों को बेनकाब करता है और जनता में विद्रोह का स्वर पैदा कर, उसे अन्याय और शोषणकर्ताओं के विरूद्ध लडने के लिए तैयार करता है। जैसे 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक में अभिमन्यु के मिथक के माध्यम से समकालीन जीवन की विसंगत परिस्थितियों के चक्रव्यूह में फँसे मनुष्य की विडंबनाा को दर्शाया है। 'देवयानी का कहना है' नाटक में प्रेम विवाह, नीति, धर्म और रहन–सहन के उसूलों को लेकर नयी–पुरानी पीढी के अंतर्द्वन्द्व को व्यक्त करता है। उपभोक्तावादी संस्कृति के इस युग में व्याप्त भ्रष्टाचार, अराजकता, असामाजिकता, गुंडागर्दी, तानशाही, आतंक आदि को हिन्दी नाटककार ने अपने नाटकों के कथ्य के रूप में चुना है।

नुक्कड नाटक आजकल फिर एक बार काफी लोकप्रिय होजी जा रही है। प्रतिबद्ध राजनैतिक, सामाजिक चेतना को व्यक्त करने में सशक्त माध्यम बन गयी है। 'हल्ला बोल' (सफदर हाशमी), 'आन ड्यूटी' 'हमे बोलने दो' (राजेश कुमार) इस धारा के उल्लेखनीय नाटक है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विभिन्न विसंगतियों के चित्रण के द्वारा आज के नाटक दर्शक पाठक को उनके बारे में सोचने के लिए विवश करता है। एब्सर्ड नाटक मुख्य रूप से मनुष्य के भीतरी यथार्थ को, कुंठा, निराशा, अब और विसंगतियों को व्यक्त करता है।

'एक सत्य हरिश्चन्द्र' में हरिजन समस्या 'किसान' नाटक में जमींदारों के अत्याचार, 'भूख आग है' में अर्थ वैषम्य, 'दिल्ली ऊँचा सुनती हैं' में प्रशासनिक अकर्मण्यता, 'उलझी आकृतियाँ' नाटक में सरकारी कार्यालयों के निष्कीयता, गिरीश कार्नाड के 'हयवदन', 'तुगलक' नाटक में संकीर्ण सामंती क्षुद्र दृष्टिकोण आद्य रंगाचार्य के अंधेर और उजाला और सुनो जनमेजय में अंधी रूढिवादिता। इस प्रकार नये जमाने की तमाम चुनौतियों को स्वीकार करते हुए नाटक को समृद्धि की ओर ले जानेवाले नाटककार है जो मौलिक हिन्दी नाटक रचना में जुडे हुए है। समकालीन हिन्दी नाटक किसी एक भाषा का न होकर अखिल भारतीय है, उसके आयाम और उपलब्धियाँ भी अखिल भारतीय है। इस कार्य का श्रेय हिन्दी नाटक को ही प्राप्त है।

संदर्भ सूचीः–

समकालीन हिन्दी नाटक रचनात्मकता का सजग हस्तक्षेप–डॉ. हर्षवाला शर्मा।
समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच–संपादक डॉ. नरेंद्र मोहन।
सिंहासन काली है–डॉ. सुशील कुमार सिन्हा।
मिस्टर अभिमन्यु– लक्ष्मी नरैन लाल।

.....